International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
September - 2021, Volume-8, Issue-5 P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

माध्यमिक विद्यालय जाने वाले छात्र तथा छात्राओं के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन

Sushil Kumar
Research Scholar, Department of Education,
Himalayan Garhwal University

Dr. Prerna Gupta
Associate Professor, Department of Education,
Himalayan Garhwal University

सार

व्यक्तित्व मानव जीवन के व्यवहार का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष होता है। किसी व्यक्ति के गुण, दोष या व्यवहार को इंगित करने के लिए का साधारण बोल–चाल की भाषा में व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग किया जाता है। जैसा की हम जानते है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी परिस्थिति के अनुकूल, विभिन परिस्थितियों में भिन्न–भिन्न व्यवहार करता है। या फिर हम ऐसा भी कह सकते है कि किसी भी पंरिस्थिति या संघर्ष में किस प्रकार का व्यवहार कोई व्यक्ति कर सकता है। यह उस व्यक्ति के व्यक्तित्व पर ही निर्भर करता है।

हम अपने परिवार या समाज में ही देखते है कि कुछ व्यक्ति किसी परिस्थिति में बहुत ही आक्रोशित हो आते है, तो कुछ व्यक्ति उसी परिस्थिति का सामना बहुत ही शान्ति के साथ करते है और कुछ व्यक्ति उसी परिस्थिति में बहुत ही घबरा जाते है तथा परिस्थिति का सामना भी नहीकर पाते हैं।

इस प्रकार यह पता चलता है कि किसी व्यक्ति का व्यक्तित्व कैसा है और वह किस परिस्थिति में किस प्रकार का व्यवहार कर सकता है।जिस परिस्थिति में व्यक्ति जैसा व्यवहार करता उसका व्यक्तित्व भी वैसा ही प्रकट होता है। हम ऐसा भी कह सकते है कि व्यक्तित्व हमरे व्यवहार का प्रतिबिंब होता है। किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति उसके व्यवहारिक क्रियाओं आचार–विचार एवं उसके द्वारा कि जाने वाली गतिविधियों द्वारा होती है।

व्यक्ति के गतिविधियों एवं व्यवहार में उसके शारीरिक, मानसिक संवेगात्मक एवं सामाजिक कारकों का समावेश होता है। एस प्रकार किसी व्यक्ति के व्यवहार से हमें यह पता चलता है कि उस व्यक्ति के व्यक्तित्व में किस कारक की भूमिका ज्यादा है। और उस व्यक्ति के व्यक्तित्व का निमार्ण किस कारक के प्रधानता के कारण हुई है।

व्यक्ति के व्यवहार का समग्र गुण ही व्यक्तित्व होता है। व्यक्ति के परिवेश में भिन्नता के कारण भी व्यक्ति के व्यक्तित्व भिन्नता देखने को मिलती है ओर व्यक्ति विभिन्न सामाजिक परिवश में भिन्न–भिन्न व्यवहार करता है।

"आईजेन्क" के अनुसार "व्यक्तित्वव्यक्ति के चस्त्रि, स्वभाव बुद्धि और शारीरिक बनावट का थोड़ा–बहुत ऐसा स्थायी और स्थिर संगठन है जो वातावरण के साथ उसके अपूर्व समायोजन को निर्धारित करता है।"

"मन" के अनुसार "व्यक्तित्व, की परिभाषा उस अति विशेषतापूर्ण संगठन के रूप की जा सकती है जिसमें, व्यक्ति की संस्चना, व्यवहार के ढंग, रुचियाँ; अभिवृतियाँ, क्षमताएँ, मान्यताएँ और रूझान सम्मलित है।"

कैटल के अनुसार, "किसी व्यक्ति का व्यक्तित्व वह विशेषता है जिसके आधार पर यह अनुमान लगाया जा सके कि किसी दी गई परिस्थिति में वह व्यक्ति किस प्रकार व्यवहार करेंगा।"

अध्ययन के उद्देश्य

1. माध्यमिक विद्यालय, जाने वाले छात्र तथा छात्राओं के व्यक्तित्व को विशेषताओं के 'ए$_1$' कारक (उत्साही–एकांकी) के विकास स्तर की तुलना करना।
2. माध्यमिक विद्यालय जाने वाले छात्र तथा छात्राओं के व्यक्तित्व की विशेषताओं के 'ए$_2$' कारक (आधुनिक–रूढ़वादी) के विकास स्तर की तुलना करना।
3. माध्यमिक विद्यालय जाने वाले छात्र तथा छात्राओं के व्यक्तित्व की विशेषताओं के 'ए$_3$' कारक (आत्मनिर्भर–समूह निर्भर) के विकास स्तर की तुलना करना।
4. माध्यमिक विद्यालय जाने वाले छात्र तथा छात्राओं के व्यक्तित्व की विशेषताओं के 'ए$_4$' कारक (संयमित–अनुशासनहीन) के विकास स्तर की तुलना करना।

परिकल्पनाएँ

1. माध्यमिक माध्यमिक विद्यालय जाने वाले छात्र तथा छात्राओं के व्यक्तित्व के विशेषताओं के 'ए$_1$' कारक (उत्साही–एकांकी)में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता।
2. माध्यमिक विद्यालय जाने वाले छात्र तथा छात्राओं के व्यक्तित्व की विशेषताओं के 'ए$_2$' कारक (आधुनिक–रूढ़वादी) में कोई सार्थक अन्तर नही होता।
3. माध्यमिक विद्यालय जाने वाले छात्र तथा छात्राओं के व्यक्तित्व की विशेषताओं के 'ए$_3$' कारक (आत्मनिर्भर–समूह निर्भर) में कोई सार्थक अंतर नही होता।
4. माध्यमिक विद्यालय जाने वाले छात्र तथा छात्राओं के व्यक्तित्व की विशेषताओं के 'ए$_4$' कारक (संयमित–अनुशासनहीन) में कोई सार्थक अंतर नही होता।

अध्ययन की विधि एवं न्यादर्श का चयन

प्रसुत अध्ययन में वर्णात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत 10वी वर्ग के उत्तराखण्ड, पौंडी गढवाल जिला मुख्यालय पौंडी के छात्र तथा छात्राओं के समष्टि के रूप में चयनित किया गया है। है। शोध अध्ययन में न्यादर्श का चयन यादृच्छिकृत न्यादर्श विधि द्वारा किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में न्यादर्श के रूप में उत्तराखण्डमाध्यमिक विद्यालय शिक्षा बोर्ड के 10वर्ग के 50 छात्र तथा 50 छात्राओं को चयनित किया गया है।

उपकरण का चयन,

शोध की आवश्यकता एवं उसके उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्रस्तुत शोध में आ0 बी0 कैटल द्वारा निर्मित 16 पी० एफ0 व्यक्तित्व परीक्षण का चयन प्रदत्तों के संकलन के लिए किया गया है। इस प्रश्नावली में सम्मलित किए गए सभी 16 शीलगुण द्विध्रुवीय है। इस परीक्षण की विश्वसनीयता गुणांक .34 से .93 तक पाया गया है तथा सम्प्रत्ययवैधता .85 तक पाया गया है।

इस परीक्षण द्वारा 16 में से निम्न 4 कारको का मापन किया गया है

क्रम संख्या (S. No.)	कारक (Factors)	कारकों के दो विपरीत ध्रुव (Two extreme Poles of Factors)
1	ए$_1$(A$_1$)	उत्साही (Enthusiastic)– एकांकी(Solitary)
2	ए$_2$(A$_2$)	आधुनिक (Experimenting)– रूढ़िवादी(Conservative)
3	ए$_3$(A$_3$)	आत्मनिर्भर (Self-Sufficient)– समूह निर्भर (Group-tied)
4	ए$_4$(A$_4$)	संयमित (Controlled)– अनुशासनहीन (Causal)

प्रस्तुत कारको का चयन कैटल के कारक विशलेषण विधि के द्वारा किया गया है। ये सभी कारक एक–दूसरे से सापेक्षिक रूप से स्वतन्त्र है।

सांख्यिकीय प्रविधियों

प्रस्तुत शोध कार्य में प्रदतों के विश्लेषण के लिए मध्यमाने, मानक विचलन एवं टी– परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय विश्लेषण एवं विवेचना

तालिका संख्या–1: माध्यमिक विद्यालय जाने वाले छात्र तथा छात्राओं के व्यक्तित्व की विशेषताओं के 'ए$_1$' कारक (उत्साही – एकांकी) की तुलना

क्रम संख्या	समूह का नाम	छात्रों की संख्या	मध्यमान	मानकविचलन	टी–मान	सार्थकता स्तर
1	छात्र	250	10.18	2.78	0.53	सार्थक नहीं है
2	छात्राएं	250	9.88	2.78		

तालिका 1 में माध्यमिकविद्यालय जाने वाले छात्र तथा छात्राओं के व्यक्तित्व की विशेषताओ के 'ए$_1$' कारक (उत्साही–एकांकी) की तुलना टी– मान के रूप में प्रदर्शित की गयी है। प्राप्त टी–मान 0.53 है जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है अतः स्पष्ट है कि दोनों वर्गो के मध्यमानो में सार्थक अन्तर नहीं है।

अतः कहा जा सकता है कि माध्यमिक शिक्षण संस्थाओं के छात्र तथा छात्राओं के व्यक्तित्व की विशेषताओं के 'ए$_1$' कारक (उत्साही– एकांकी) में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका संख्या–2 माध्यमिक विद्यालय जाने वाले छात्र तथा छात्राओं के व्यक्तित्व विशेषताओ के 'ए$_2$' कारक (आधुनिक – रुढिवादी) की तुलना

क्रम संख्या	समूह का नाम	छात्रों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान	सार्थकता स्तर
1	छात्र	250	10.90	2.83	1.5	सार्थक नहीं है
2	छात्राएं	250	11.26	2.48		

तालिका–2 में माध्यमिकविद्यालय जाने वाले छात्र तथा छात्राओं के व्यक्तित्व की विशेषताओं के 'ए$_2$' कारक (आधुनिक – रूढ़िवादी) की तुलना टी–मान के रूप प्रदर्शित की गई है। प्राप्त टी–मान 1.5 है जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर नहीं है, अतः स्पष्ट है कि दोनो समूहों के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

अतः कहा जा सकता है कि माध्यमिक विद्यालय जाने वाले छात्र तथा छात्राओं के व्यक्तित्व की विशेषताओं में 'ए$_2$' कारक(आधुनिक – रूढ़िवादी) में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।

तालिका संख्या – 3: माध्यमिक विद्यालय जाने वाले छात्र तथा छात्राओं के व्यक्तित्व विशेषताओं के 'ए$_3$' कारक (आत्मनिर्भर – समूह निर्भर) की तुलना

क्रम संख्या	समूह का	छात्रों की	मध्यमान	मानक	टी–मान	सार्थकता

	नाम	संख्या		विचलन		स्तर
1	छात्र	250	9.76	2.67	0.46	सार्थक नहीं है
2	छात्राएं	250	9.88	3.05		

तालिका 3 में माध्यमिक विद्यालय जाने वाले छात्र तथा छात्राओं के व्यक्तित्व के विशेषताओं के 'ए$_3$' कारक (आत्मनिर्भर–समूह निर्भर) की तुलना टी–मान के रूप में प्रदर्शित की गई है। प्राप्त टी–मान 0.46 है जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है अतः स्पष्ट है कि दोनों समूहों के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

अतः कहा जा सकता है कि माध्यमिक विद्यालय जाने वाले छात्र तथा छात्राओं के व्यक्तित्व की विशेषताओं के 'ए$_3$' कारक (आत्मनिर्भर–समूह निर्भर) में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या–4: माध्यमिक विद्यालय जाने वाले छात्र तथा छात्राओं के व्यक्तित्व विशेषताओं के 'ए$_4$' कारक (संयमित–अनुशासनहीन) की तुलना

क्रम संख्या	समूह का नाम	छात्रों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान	सार्थकता स्तर
1	छात्र	250	12.64	3.51	0.33	सार्थक उत्तर नहीं है
2	छात्राएं	250	12.24	3.65		

तालिका 4 में माध्यमिक विद्यालय जाने वाले छात्र तथा छात्राओं के व्यक्तित्व के विशेषताओं के 'ए$_4$' कारक (संयमित–अनुशासनहीन) की तुलना टी–मान के रूप में प्रदर्शित की गई है। प्राप्त टी–मान 0.33 है जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है अतः स्पष्ट है कि दोनों समूहों के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

अतः कहा जा सकता है कि माध्यमिक विद्यालय जाने वाले छात्र तथा छात्राओ के व्यक्तित्व विशेषताओं के 'ए$_4$' कारक (संयमित – अनुशासनहीन) में कोई सार्थक अन्तर है। छात्रों का मध्यमान 10.78 है जबकि छात्राओं का 12.94 है अतः छात्राओं को छात्रों की तुलना में अधिक संयमित पाया गया है।

शोध परिणाम

1. शोध परिकल्पना न0 1 के अनुसार ''माध्यमिक विद्यालय जाने वाले छात्र तथा छात्राओ की व्यक्तित्व विशेषताओं के 'ए$_1$' कारक (उत्साही– एकांकी) में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। आंकड़ों के विश्लेषण से टी–मान 0.53 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है अतः शोध परिकल्पना, स्वकृत होती है। शोध परिणाम से यह स्पष्ट होता है

कि माध्यमिक विद्यालय जाने वाले छात्र तथा छात्राओं के व्यक्तित्व की विशेषताओं के 'ए$_1$' कारक में (उत्साही – एकांकी) में व्यक्तित्व की विशेषताएँ समान होती है।

2. शोध परिकल्पना न0 2 के अनुसार "माध्यमिक विधालय जाने वाले छात्र तथा छात्राओं की व्यक्तित्व विशेषताओं के 'ए$_2$' कारक (आधुनिक – रूढ़िवादी) में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।" आंकडों के विशलेषण से टी– मान 1.5 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है अतः शोध परिकल्पना स्वकृत होती है। शोध परिणाम से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक विद्यालय जाने वाले छात्र तथा छात्राओं के व्यक्तित्व विशेषताओं के 'ए$_2$' कारक (अधुनिक – रूढ़िवादी) में व्यक्तित्व की विशेषताएँ समान होती है।

3. शोध पुरिकल्पना न0 3 के अनुसार माध्यमिक विद्यालय जाने वाले छात्र तथा छात्राओं के व्यक्तित्व की विशेषताओं (आत्मनिर्भर – समूह निर्भर) में कोई अन्तर नहीं होता है।" आंकड़ों के विश्लेषण से ही मान 0.46 प्राप्त हुआ है जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है अतः शोध परिकल्पना स्वीकृत होती है। शोध परिणाम में स्पष्ट है कि माध्यमिक विद्यालय जाने वाले छात्र तथा छात्राओं के व्यक्तित्व की विशेषताओं के 'ए$_3$' कारक (आत्मनिर्भर –समूह निर्भर) में व्यक्तित्व की विशेषताएं समान होती है।

4. शोध परिकल्पना न0 4 के अनुसार "माध्यमिक विद्यालय जाने वाले छात्र तथा छात्राओ के व्यक्तित्व की विशेषताओं के 'ए$_4$' कारक (संयमित – अनुशासनहीन) में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।" आँकड़ों के विश्लेषण से टी–मान 7.01 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है अतः शोध परिकल्पना अस्वीकृत होती है। शोध परिणाम से स्पष्ट है कि माध्यमिक विद्यालय जाने वाले छात्र तथा छात्राओ के व्यक्तित्व की विशेषताओं के 'ए$_4$' कारक (संयमित – अनुशासनहीन) में व्यक्तित्व की विशेषताएँ समान नहीं होती है। छात्राएँ– छात्रों की अपेक्षा अधिक संयमित रहती है।

शोध निष्कर्ष

माध्चमिक शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों की व्यक्तित्व की विशेषताएँ कारक 'ए$_1$' (उत्साही–एकांकी), 'ए$_2$' कारक (आधुनिक – रूढ़िवादी), 'ए$_3$' कारक (आत्मनिर्भर –समूह निर्भर) के संदर्भ में छात्र तथा छात्राओं में समान होती है। जबकि कारक 'ए$_4$' (संयमित – अनुशासनहीन) के संदर्भ में समान नहीं होती है। छात्राएँ, छात्रों की तुलना में अधिक संयमित होती है।

शोध परिणाम का शैक्षिक अनुप्रयोग

व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास में परिवार की भूमिका सबसे बड़ी होती है इसलिए परिवार को बालक का प्रथम पाठशाला भी कहा गया है। बालकों का समय सबसे ज्यादा परिवार के साथ व्यतीत होता है। बालक के माता–पिता तथा अन्य सदस्य प्रस्तुत अध्ययन के शोध परिणाम के द्वारा बालकों की समस्याओं को जान सकते है और उस परिणाम का सदउपयोग बालक के कैरियर या उसके अच्छे प्रदर्शन में कर सकते है। इस शोध परिणाम के द्वारा छात्र तथा छात्राओं की समस्याओं को समझकर उन्हें सही दिशा प्रदान कर सकते है।

सन्दर्भ सूची

- आलपोर्ट एच0डब्ल्यू, (1937): पर्सनेल्टीः ए साइक्लोजीकल इन्टरप्रिटेशन, पृष्ठ संख्या 48, हेनरी होल्ड एम0वाई0)।
- कैटेल, आर0बी0, (1970): हॉल तथा लिंजे द्वारा उद्भुत, थ्योरीज ऑफ पर्सनेलिटी, द्वितीय संस्करण, न्यूयार्क, जॉनविले. पू.सं. 386
- आईजैन्क, एच० जे०(1971): द स्ट्रक्चर ऑफ ह्यूमन पर्सनेलिटी, (तृतीय संस्करण), न्यूयार्क, मैथ्यून, पू.सं. 21
- क्रौन बैंक, एला जे०: एजुकेशनल साइकोलोजी, हारकोर्ट, ब्रेस, न्यूयार्क, 1954
- कैली टी०एल०: इन्टरप्रिटेशन ऑफ एजुकेशनल मैजरमेन्ट, वर्ल्ड बुक कं०, 1939 कपिल, एच०के०: "अनुसंधान विधियाँ" हर प्रसाद भार्गत, 41230 कचहरी घाट, आगरा 4, 1984
- कॉल, लोकेशः मैथडोलोजी ऑफ एजुकेशन रिसर्च, विकास पब्लिशिंग हाऊस, प्रा०लि०, 1984
- गुड, सी०बी०, स्केट्स डी० "मैथड्स ऑफ रिसर्च" न्यूयार्क एपलटेन कन्टरी काट्स।
- चौबे, एस0पी): मनोविज्ञान और शिक्षा, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा।बुच एम०बी०: फर्स्ट सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन (1972)
- बुच एम०बी०: सैकिण्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन (1972 78)
- बुच एम०बी०: थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन (1978–83)
- बुच एम०बी०: फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन वॉल्यूम फर्स्ट एण्ड वोल्यूम सैकिण्ड (1985–88)
- शर्मा, जी०के० एण्ड शर्मा जी०एस०: "शिक्षा में प्रारम्भिक साख्यिकी" प्रकाशक रस्तोगी पब्लिकेशन, शिवाजी रोह, मेरठ।